अंक - 34 | जुलाई - दिसम्बर 2016

भाकृअनुप
ICAR

CIRG
1979
MATHURA

अजामुख

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
ICAR-Central Institute for Research on Goats
(An ISO 9001:2008 Certified Organization)

सम्पादक मंडल

मुख्य सम्पादक:
डा. भुवनेश्वर राय

सम्पादक :
डा. गोपाल दास
डा. अनु राहल
डा. नितिका शर्मा
डा. विजय कुमार
डा. हरिऔध तिवारी

टंकक
जगदीश चन्द्र

निदेशक, भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा (उ.प्र.) भारत द्वारा प्रकाशित
http://www.cirg.res.in

निदेशक की कलम से

प्रिय किसान भाइयो मैं विशेषकर बकरी पालन से जुड़े हुए किसान भाईयों एवं उद्यमियों को मैं अपनी ओर से बधाई देना चाहता हूँ, जिन्होंने बकरी पालन को न केवल अपनी आजीविका का साधन बनाया है वरन इसे एक व्यवसाय के रूप में परिवर्तित करने की दिशा में अच्छा कार्य किया है। विगत वर्ष की ओर देखते हुए मुझे बकरी पालन से जुड़े किसानों में काफी उत्साह एवं ऊर्जा की अनुभूति हो रही है। भारतवर्ष दुनिया में सर्वाधिक मात्रा में बकरी दुग्ध उत्पादन करने वाला देश है, लेकिन इसके दुग्ध की गुणवत्ता बढ़ाकर इसके समुचित विपणन व्यवस्था को लागू करना आवश्यक है। जिससे बकरी पालकों के हित के साथ उपभोक्ता का भी हित लाभ सम्भव हो सके। पशु गणना (2012) के अनुसार देश में 3.4 करोड़ दुग्ध उत्पादक बकरियाँ हैं जो कि कुल दुग्ध उत्पादन में 31 प्रतिशत का योगदान करती हैं। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि बकरी दुग्ध उत्पादन की क्षमता कमोवेश भैंस द्वारा उत्पादित दुग्ध के बराबर है तथा गौ पशुओं के दुग्ध उत्पादन से थोड़ा ही (26 प्रतिशत) कम है। दूसरे पशुओं की तुलना में बकरी का दुग्ध गुणवत्ता में मानव पोषण की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। बकरी के दुग्ध में वसा के कण छोटे होते हैं तथा इसमें पर्याप्त मात्रा में लैक्टोज, लघु /मध्यम आकार के फैटी एसिड एवं कम मात्रा में अल्फा एस-1 केसिन पाया जाता है, जिसे गुणवत्ता की दृष्टि से अच्छा पाया गया है। इसको ठीक तरह से प्रचारित करके उपभोक्ताओं तक पहुंचाने की आवश्यकता है। बकरी के दुग्ध की गुणवत्ता बढ़ाकर पनीर बनाया जाता है लेकिन इसे बटर मिल्क में परिवर्तित करने से यह दुग्ध लघु/मध्यम फैटी एसिड से परिपूर्ण हो जायेगा जो वृद्ध व्यक्तियों एवं हृदय रोगियों के लिए वरदान साबित होगा। यह खेद का विषय है कि बकरियों की देश में संख्या में पिछली पशु गणना की तुलना में 3.82 प्रतिशत की कमी देखी गई है। लेकिन साथ ही देश में काफी संख्या में बकरियों के फार्म उद्यमियों द्वारा खोले जा रहे हैं, जिससे बकरी पालन का एक नया परिदृश्य सामने आ रहा है। भारत में बकरी पालन का भविष्य उज्जवल है क्योंकि यहाँ की अधिकांश जनता बकरी के दूध एवं मांस का उपभोग करती है। देश के सामने करोड़ों लोगों को संतुलित पोषण उपलब्ध कराना एक चुनौती से कम नहीं है, बकरी से प्राप्त उत्पाद (दूध एवं मांस) इस कमी को पूरा करने में काफी हद तक सक्षम हैं।

इस दौरान संस्थान में दिनांक 26 सितम्बर, 2016 को सम्माननीय महानिदेशक एवं सचिव डेयर डा. त्रिलोचन महापात्र जी का आगमन हुआ। डा. महापात्र ऊँची सोच रखने वाले व्यक्तित्व हैं तथा सदा ही प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। उन्होंने अपने सम्बोधन में बकरी पालन से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए युवा बकरी पालकों एवं उद्यमियों को प्रोत्साहित किया । मैं हृदय से सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ, जिनके सहयोग से माननीय महानिदेशक जी का संस्थान में दौरा सुचारू रूप से कार्यान्वित हुआ।

मैं इस अवसर पर अजामुख के प्रकाशन से सम्बन्धित वैज्ञानिकों की टीम को बधाई देता हूँ।

(एम. एस. चौहान)
निदेशक

प्रजनन की उन्नत तकनीकियाँ एवं उनका पशु उन्नयन में प्रयोग

डा. साकेत भूषण, डा. गोपाल दास एवं डा. नितिका शर्मा

हमारे देश में कुल पशुधन 485 मिलियन है जिसमें गौ–पशु 185.18 मिलियन, भैंस 61.47 मिलियन एवं बकरियाँ 135.17 मिलियन हैं। हमारे देश में 43.78 प्रतिशत वध एवं 15 प्रतिशत मृत्युदर के बावजूद भी बकरियों की संख्या में औसतन 3.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से वृद्धि हो रही है। विकासशील देशों में बकरी पालन व्यवसाय का योगदान काफी महत्वपूर्ण है। हमारे देश में गरीब जीविकोपार्जन के लिए बकरी पालन करते रहे हैं। लेकिन अब बकरी पालन केवल गरीब तक ही सीमित न रह कर एक उद्योग के रुप में पनप रहा है जिसमें उच्च मिश्रित एवं धनी लोग भी बकरी पालन में आगे आ रहे हैं। बकरी पालन से दूध प्राप्ति के साथ–साथ माँस, खाल, बाल एवं खाद के विक्रय से अच्छी आय भी होती है। निम्न कोटि के पशु को पालना निरर्थक है। अच्छा यही है कि उत्तम पशुओं को चुना जाये तभी अधिक उत्पादन एवं लाभ की आशा की जा सकती है। प्रजनन और वरण को पशु प्रजनन का हथियार कहा जाता है। वरण और प्रजनन दोनों ही एक दूसरे से संबन्धित है और एक की अनुपस्थिति में दूसरे का कोई प्रभाव नहीं होता है। प्रजनन पद्धतियों से हमारा तात्पर्य है कि नर और मादा को छाँटा जाये और प्रजनन करा कर इच्छित गुणों वाला पशु पैदा किया जाये। प्रजनन करने से पहले अच्छी तरह अध्ययन कर लेना चाहिए ताकि कौन सी प्रजनन विधि को अपनाया जाए जिससे हमें इच्छित गुण वाला पशु प्राप्त हो सके। इसलिए प्रजनन पद्धति तभी सफल हो सकती है, जबकि प्रजनन में प्रयोग किये जा रहे पशु उत्तम पैतृक गुण वाले हों, और फिर बच्चों के अन्दर अच्छे पैतृक गुण जायें।

भारत की बकरियों की नस्लें उपयोग के अनुसार मुख्यत: तीन प्रकार की हैं (1) दूध देने वाली जैसे जखराना, जमुनापारी आदि (2)

मांस उत्पादन करने वाली जैसे गंजम, ब्लैक बंगाल (3) दोगली नस्लें जो कि मांस एवं दूध दोनों के लिए उपयोग किए जा सके। वर्तमान अनुसंधान यह कहते हैं कि कुछ नस्लें मांस उत्पादन के साथ साथ पर्याप्त मात्रा में दूध भी दे सकती हैं जैसे बरबरी। अन्य नस्लों में दो गुणों की वृद्धि करना केवल संकरण प्रजनन की विधियों को अपनाने से ही हो सकता है । भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की अखिल भारतीय समन्वित बकरी उन्नयन परियोजना ने भारत में बकरियों के लिए एक ऐसी प्रजनन नीति बनाई है जिस नीति के अनुसार प्रत्येक राज्य को कई भागों में बाँट कर वहाँ के लिए वहीं की उचित नस्लों को उन्नयन करने की योजना चलाई गई है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य यह है कि वहाँ स्थानीय नस्लों में चयनित प्रजनन करके तथा अशुद्ध नस्ल की बकरियों को क्रमोन्नति के द्वारा सुधार किया जाए। परियोजना के द्वारा कुछ फार्म बकरों को तैयार करने के लिए भी खोले गये हैं। यहाँ सरकारी खर्चे के द्वारा बकरों को तैयार किया जाता है तथा इनका गाँवों में कम दर पर किसानों को बेच दिया जाता है या इनका वितरण गरीब बकरी पालकों को मुफ्त किया जाता है। कई केन्द्रों पर उन्नतशील बकरे बाँटने के लिए चयनित बकरी प्रजनकों से बकरों को परियोजना के अंतर्गत खरीद भी लिया जाता है। चयनित प्रजनन प्रणाली से बकरों की प्रजनन शक्ति की परीक्षा में सहायता मिलती है। यह ज्ञात हो सकता है कि अमुक बकरे के कितने मेमनें हुए और मादाओं ने अपनी माताओं से अधिक दूध दिया हैं या नहीं। यह सिद्ध हो जाने पर कि अमुक बकरे की मादाओं ने अपनी माताओं से अधिक दूध दिया है वह बकरा उत्तम होता है। संतति परीक्षण से व्यापक स्तर पर उपयोग करने के लिए एवं बकरों की आनुवांशिक उत्पादन क्षमता के मूल्यांकन को बेहतर बनाने के लिये अन्य सरकारी व गैर–सरकारी फार्मो व किसानों की बकरियों को भी शामिल करने की आवश्यकता है। इसके साथ–साथ इस

योजना के कार्य क्षेत्र को बढ़ाने की आवश्यकता है। बकरों के मूल्यांकन की प्रणाली में हुई प्रगति उनकी आनुवंशिकी उत्पादन क्षमता को उचित तरीके से आंकलन करने में भी सक्षम है। विभिन्न नस्ल के अच्छे बकरों की उत्पत्ति हेतु ओपन न्युक्लियस ब्रीडिंग सिस्टम पद्धति का उपयोग करते हुए न्युक्लियस फार्मों की संस्थापना करने की जरूरत है। इन फार्मों पर नई विकसित की गई जीव वैज्ञानिकी तकनीकें जैसे कि मोएट आदि का प्रयोग भी करना चाहिए, जिससे लगातार बढती हुई अच्छे बकरों की मांग की पूर्ति की जा सके। दूध के साथ-साथ दूध के संघटन जैसे कि वसा, एस.एन.एफ. व प्रोटीन आदि की मात्रा को सभी चयन प्रोग्रामों में शामिल कर देश को दुग्ध पदार्थों की उत्पादकता तथा गुणवत्ता में प्रतिस्पर्धा के लिये अग्रसर करना चाहिए। अलग अलग नस्ल की बकरियों की जनगणना के साथ-साथ उनके दूध एवं मांस उत्पादन की क्षमता के बारे में जानकारी रखना अच्छे नस्ल सुधार प्रोग्राम की रूपरेखा बनाने हेतु अति अनिवार्य है। एक राष्ट्रीय स्तर का बकरी नस्ल सुधार समिति बनाया जाना चाहिए जो कि देश भर के किसानों की बकरियों की दूध एवं मांस उत्पादन की क्षमता हेतु आंकड़ों के रखरखाव हेतु आवश्यक ढांचे को खड़ा कर सके। इसके साथ साथ इस समिति का काम देश की सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं को, जो बकरी नस्ल सुधार और दुग्ध एवं मांस उत्पादन के कार्यक्रमों में लगी हुई हैं, को आपस में समन्वित करना है।

बकरों का प्रजनन के लिये वैज्ञानिक आधार पर चयन करना चाहिए। अनेक बकरे देखने में हट्टे-कट्टे और मजबूत दिखाई देते हैं, परन्तु उनके वीर्य में कोई दोष होने के कारण बकरियाँ गाभिन नहीं होती हैं। अत: बकरियाँ गाभिन करने से पहले और बाद में बकरों के वीर्य की परीक्षा एवं मूल्यांकन कर लेना चाहिए तथा अच्छे वीर्य वाले बकरे को ही प्रजनन के लिए चयन करना चाहिए। अनेक रोग ऐसे होते हैं जो बकरों द्वारा बकरियों को हो जाते है। परन्तु वैज्ञानिक विधि से परीक्षित पूर्ण स्वस्थ बकरों का प्रयोग होने के कारण मादाओं को जननेन्द्रिय रोग होने की आशंका नहीं है।

बकरियों के लिए चारा उपलब्धता में प्रमुख समस्याऐं

डोरी लाल गुप्ता एवं राजकुमार सिंह

बकरियाँ सामान्यत: बेकार पड़ी जमीन, सड़क के किनारे नदी व नहर के किनारे चर कर चारा प्राप्त करती हैं जो कि समुचित मात्रा एवं गुणवत्ता में नहीं प्राप्त हो पाता है जिससे कि किसान बकरियों से अच्छा उत्पादन नहीं ले पाते हैं। बकरियों के लिए चारा उत्पादन में निम्नलिखित बाधाऐं हैं:

1. बकरियों के चरने वाली जमीन वर्षा पर आधारित होती है तथा हरे चारे की उलब्धता सिर्फ बरसात के महीनों में ही रहती है।
2. चराई वाली जमीनें अधिकांशत बेकार वनस्पतियों से अच्छादित रहती हैं जिनको कि बकरियाँ नहीं खाती हैं।
3. भूमिहीन व सीमान्त किसान बकरियों के लिए चारे की खेती नहीं कर पाते हैं।
4. भूमि की दशा व जलवायु के अनुकूल चारा फसलों में प्रजातियों का अभाव है।
5. गैर परम्परागत चारा स्रोतों का समुचित ज्ञान न होना।
6. सिंचाई के संसाधनों का चारा फसलों में अभाव ।
7. चारा उत्पादन के अन्तर्गत अधिक क्षेत्रफल का न होना।
8. निम्न कोटि चारा स्रोतों (भूसा इत्यादि) की गुणवत्ता वृद्धि सम्बन्धी तकनीकों का अभाव।
9. चारा फसलों का बाजारी मूल्य न होने के कारण किसान कम रूचि लेते हैं।
10. चारे के भण्डारण हेतु अधिक स्थान की आवश्यकता होने के कारण भण्डारण में भी समस्या होती है।
11. चारे के पौष्टिक मान के प्रति किसानों की अनभिज्ञता ।
12. चारा फसलों के लिए प्रमाणीकृत बीजों का अभाव।

मुजफ्फरनगरी भेड़ों के प्रजनन एवं आनुवंशिक सुधार हेतु उत्तम तकनीकियाँ

डा. गोपाल दास, डा. नितिका शर्मा एवं योगेन्द्र कुमार कुशवाहा

भेड़ों की मुजफ्फरनगरी नस्ल के रेवड़ों से अधिक उत्पादन व आर्थिक लाभ हेतु भेड़ पालकों द्वारा उत्तम प्रजनन तकनीकियों का प्रयोग अति आवश्यक है। वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणित व किसानों द्वारा प्रयोग में लाई जा सकने वाली तकनीकियाँ यहाँ वर्णित की जा रही हैं जिन्हें अपनाकर भेड़ पालक मुजफ्फरनगरी भेड़ की नस्ल में सुधार कर उचित फायदा उठा सकेंगे।

मुजफ्फरनगरी नस्ल की भेड़ की पहचान: मुजफ्फरनगरी भेड़ मुजफ्फरपुर जिले की उत्तम मटन पैदा करने वाली प्रमुख नस्ल है। विशुद्ध मुजफ्फरनगरी नस्ल की भेड़ की पहचान कर प्रजनन कराना आर्थिक लाभ हेतु आवश्यक है। मुजफ्फरनगरी नस्ल की भेड़ों के मुख्य पहचान चिन्ह सफेद ऊन, लम्बे व लटके कान, लम्बी पूँछ, सींग विहिन सिर व सुडोल शरीर आदि हैं। एक वर्ष की आयु के बाद नर व मादा भेड़ों को वयस्क श्रेणी में रखा जाता है । सामान्यत: नर व मादा को क्रमश: 18 व 12 माह की आयु पर प्रजनन में प्रयोग करते हैं । मुजफ्फरनगरी नर व मादा वयस्क भेड़ों के औसत शारीरिक भार क्रमश: 45–55 व 35–45 किलोग्राम होते हैं।

उचित समय पर छँटनी: भेड़ पालन को अधिक लाभकारी बनाने के लिये कम उत्पादक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से अनुपयोगी जानवरों को रेबड़ से निम्न कारणों द्वारा छँटनी कर निष्कासित किया जाता है ताकि प्रति जानवर उत्पादकता में घटोतरी न आये । सर्वप्रथम ऐसे मेमने जो नस्ल के अनुरूप नहीं हैं, जिनकी शारीरिक वृद्धि सामान्य नहीं होती अथवा पैर टेड़े मेड़े होते हैं उन्हें रेबड़ से निष्कासित कर देना चाहिए। जिन वयस्क भेड़ें तथा मेड़ों की प्रजनन क्षमता कम होती है उन्हें रेबड़ में रखना आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक हैं । रेबड़ में कुछ जानवर ऐसे भी पाये जाते हैं जिन पर उपचार का प्रभाव बहुत ही कम पड़ता है ऐसे जानवरों की छँटनी कर निष्कासन आवश्यक है । सामान्यत: भेड़ों की औसत आयु 10 वर्ष है लेकिन इनमें 7 वर्ष पर इनके उत्पादन एवं जनन गुणों में गिरावट आ जाती है तथा इनके अधिक बीमार होने की सम्भावना भी बढ़ जाती है । इसके साथ ही वृद्ध भेड़ों से प्राप्त मेमने भी कम शारीरिक भार व कम रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले पैदा होते हैं जिनमें मृत्यु दर बढ़ जाती है। अत: नियमित रूप से समय-समय पर उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर जानवरों की छँटनी कर निष्कासित करना चाहिये ।

रेवड़ में मेंढ़े का महत्व: रेवड में वयस्क भेड़ों से मेमनों के रूप में अगली फसल लेने के लिए उचित मेढ़ों का प्रयोग अति आवश्यक है। एक मेढ़े द्वारा एक प्रजनक मौसम में 30–40 मेमने पैदा किये जा सकते हैं। जबकि एक भेड़ एक प्रजनक मौसम में प्राय: एक मेमने को जन्म देती है। एक वर्ष में दो प्रजनक मौसम आते हैं व दो वर्ष में एक भेड़ से अधिक से अधिक तीन बच्चे लिये जा सकते हैं जबकि दो वर्ष में एक मेंढा चार प्रजनक मौसम 120–150 भेड़ों की सेवायें देता हुआ 100 से अधिक मेमनों को जन्म दे सकता है। एक भेड छ: वर्ष की आयु तक 5–7 मेमने पैदा कर सकती है जबकि एक मेढ़ा इसी आयु तक 150–200 मेमनों को जन्म दे सकता है। अत: रेवड़ में उन्नत नस्ल के मेमने पैदा करने के लिए मेढे का चयन अति महत्वपूर्ण कार्य है। भविष्य के रेवड़ की नींव मेढे पर ही टिकी होगी । एक मेंढे के चयन में एक भेड़ की तुलना से 30 गुना अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हैं। मेंढे के चयन का कार्य जन्म से पूर्व ही प्रारम्भ कर देना चाहिए जो भेड़ें शुद्ध मुजफ्फरनगरी नस्ल के सभी पहचान चिन्ह रखती हों उन्हीं से जन्मे नर मेमनों से ही मेंढे का चयन होना चाहिए।

जन्म पर ही नर मेमनों की परख: इन मेमनों में किसी प्रकार का नस्ल दोष आँखों के गिर्द चक्कर व कानों के नीचे का हिस्सा भूरा

होने के अतिरिक्त कहीं भी काले या भूरे रंग की ऊन का होना, तोतानुमा जबड़ा या दांतों से संबंधित अन्य कोई बीमारी, कुबड़ापन, लंगड़ापन, अंधापन व बोनापन न हो तथा मुजफ्फरनगरी नस्ल के सभी पहचान चिन्ह आवश्यक हों।

छः माह की आयु पर परख: मेमने का जन्म के समय भार तथा छः माह की आयु पर भार के आधार पर ही मेमने का चयन होना चाहिए। उपरोक्त मापदण्डों पर खरे उतरने वाले मेमनों को ही अगली पीढ़ी का जनक बनने का हक है।

मेढों की शारीरिक बनावट की परख: यदि कई मेमने उपरोक्त मापदण्डों पर खरे उतरतें हों तो उनका श्रेणीकरण कर लेना चाहिए व उच्च श्रेणी वालों का चयन कर उनकी आकर्षकता पर ध्यान देना चाहिए। जिनमें चौड़ा व गहरा वक्ष और पेट, माँसल पुटठें, पीठ व कठि मजबूज टाँगें, मुलायम त्वचा, चमकीली बड़ी आँखें व चौड़े नथुने, थूथन, जबड़ा व कपोल, सुडोल, बदन व लम्बा शरीर होना शामिल है।

मेंढे के प्रजनन अंगों व क्षमता की परख: सभी गुण होने के बाद भी यदि मेंढे के अण्डकोषों व वीर्य में दोष हो तो मेंढे में कुछ भी नहीं है । अतः मेढें के वृषणों की जाँच अति आवश्यक है। अण्डकोष समानान्तर व विकसित हों, श्रृतुकाल में रतिवाली भेड़ों पर चढ़ने में तीव्रता, मर्दानगी व काबू करने की क्षमता और झटका देकर वीर्य निष्पादन क्षमता अच्छी हो। ऐसे मेंढों से भेडों में गर्भ धारण करने की क्षमता बढ़ती है।

प्रजनन के समय मेंढे की आयु: प्रजनन में प्रयुक्त मेंढे की आयु 18 माह से कम न हो। पाँच वर्ष से अधिक आयु के मेंढे प्रयोग में न लें तो अच्छा होगा।

रेवड में मेंढे का प्रजनन काल: प्रत्येक दो वर्ष के बाद मेंढा बदल लें ताकि रेवड़ में अंत: प्रजनन से बचा जा सकें।

मेंढे के निकट संबंधियों से मिलान का बचाव: यदि मेंढा रेवड़ में जन्मे मेमनों में से ही एक है तो फिर उसके निकट संबंधियों जैसे माँ, बहन, बेटी व चचेरी बहन, मौसी आदि से मिलान नहीं कराना चाहिऐ। जब तक कि विशुद्ध नस्ल उत्पादन व एक विशिष्ठ रेखित उपनस्ल पैदा करना उद्देश्य न हो।

मेंढो व सगे संबंधियों के अभिलेखों का ज्ञान: भेडों में शारीरिक भार व मांस की मात्रा व गुणवत्ता ही मुख्य आर्थिक घटक हैं जिनके लिए भेड़ पालक भेड़ पालता है और धन कमाता है हालांकि इन गुणों का अनुवांशिक गतित्वांक उच्च से मध्यम स्तर का है तथा नस्ल सुधार मेंढों व भेड़ों की व्यक्तिगत उत्पादन क्षमता पर किया जा सकता है। परन्तु ऐसे प्रजनक जानवरों के माता पिता या भाई बहन के उत्पादन अभिलेखों को भी परखा जा सकता है । जब रेवड़ में कई मेंढे प्रयोग में लाये जा रहे हों तो अभिलेखों का रख रखाव अति आवश्यक है तथा प्रत्येक प्रजनक मौसम के प्रारम्भ से पूर्व अभिलेखों के आधार पर पूर्व में प्रयुक्त मेंढों से जन्मे बच्चों का मूल्यांकन कर लेना चाहिए तथा ऐसी संतति परीक्षा के आधार पर मेंढों का श्रेणी क्रम तय कर उच्च श्रेणी वाले मेंढों का ही अगले मौसम में प्रजनन हेतु उपयोग करें तथा निम्न श्रेणी वाले मेंढों की छटनी कर उनके स्थान पर उच्च श्रेणी वाले मेंढों से पैदा हुए मेमनों को भविष्य के मेंढों का दर्जा देकर प्रयोग करना चाहिये।

यदि भारतीय लोक कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं, इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकता है ।

चक्रवर्ती राज गोपालचारी

राष्ट्र की एकता को बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिन्दी ही हो सकता है।

सुब्रहमणयम भारती

देश के सबसे बड़े भू भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्र भाषा की अधिकारिणी है ।

सुभाष चन्द्र बोस

महान चरित्र का निर्माण महान और उज्जवल विचारों से होता है।

स्वामी शिवानन्द

महिला किसानों की बकरियों उपचार व टीकाकरण द्वारा बकरी पालन में सहायता

मनाली बघेल व साकेत भूषण

हमारे देश की ग्रामीण महिलायें गृहस्थी के कार्यों के अतिरिक्त धनार्जन के कार्य करने में भी समर्थ हैं तथा लगातार पशुपालन, कृषि व मजदूरी जैसे कार्यों में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती आयी हैं परन्तु उन्हें इसकी अनुभूति नहीं है जिस कारण ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण नहीं हो पाता है व उनका सामाजिक स्तर निम्न कोटी का रहता है। इन परिस्थितियों से उभरने के लिये ग्रामीण महिलाओं को मार्गदर्शन, उत्साह व साधन की आवश्यकता है । बकरी पालन अनपढ़ व कमजोर ग्रामीण महिलाओं के लिये धनार्जन का एक अच्छा माध्यम है जिसे वह कम पूंजी लगाकर अपनी घर गृहस्थी के कार्यों के साथ भी आसानी से कर सकती हैं तथा इस प्रकार ग्रामीण महिलाओं को बकरी पालन द्वारा आत्मनिर्भर बनाकर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है । पांच से दस बकरियों को घर पर ही भूसा, खाने पीने के अवशेष जैसे रोटी, आटे की भूसी, पेड़ की पत्तियां व सार्वजनिक स्थलों पर घास चराकर आसानी से पाला जा सकता है। इसी उद्देश्य के साथ, संस्थान के पशु आनुवंशिकी व प्रजनन विभाग में चल रही विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की परियोजना 'लाइवली हुड सीक्योरिटी फौर रूरल वुमेन थ्रू साइंटिफिक गोट फार्मिंग' के अंतर्गत फरह ब्लाक के दो गांव नगला चंद्रभान व बर का नगला की समस्त बकरी पालक महिलाओं को बकरी पालन प्रबंधन में सुधार, मार्गदर्शन एवं सहायता करने के लिए शामिल किया गया ।

इन महिलाओं की बकरियों के उपचार, रोकथाम एवं टीकाकरण के लिए चार स्वास्थ्य शिविर लगाये गये । इन दोनों गांवों में बकरी पालन एवं प्रबंधन निम्न स्तर का पाया गया । बकरियों की चिकित्सा एवं टीकाकरण की महत्ता भी कम देखी गयी जिस कारण यहां मृत्यु दर भी उच्च 10 –15 प्रतिशत पायी गयी । इस क्षेत्र की बकरियों में दस्त, अफरा, जूँ (टिक्स), पेट के कीड़े, मोहा (कांटेजियस एक्थाइमा), चारा न खाना (एनोरेक्सिया), बुखार, खांसी, जुकाम जैसे रोग आमतौर पर पाये गये । हमने पिछले एक वर्ष में नियमित रूप से इस क्षेत्र में जाकर इन रोगों के उपचार व रोकथाम हेतु उपयुक्त दवाइयां आवश्यकता के अनुसार समय-समय पर महिला किसानों को प्रदान कीं । इसके साथ ही यहां चार स्वास्थ्य शिविर लगाकर तीन माह व उससे ऊपर की 171 बकरियों में घातक रोगों जैसे बकरी प्लेग (पी.पी.आर.) का टीका लगवाया तथा तीन माह व उससे ऊपर की 145 बकरियों में आंत्र विषाक्तता/ इन्टेरोटाक्सीमिया (ई.टी.) का टीका एवं 145 बकरियों में ई.टी. का बूस्टर टीका लगवाया, साथ ही इन स्वास्थ्य शिविर के दौरान बकरियों में विभिन्न रोगों के लिये आवश्यक दवाइयाँ देकर महिला किसानों की आर्थिक रूप से सहायता की तथा बकरियों के स्वास्थ्य व चिकित्सा से सम्बंधित उनके ज्ञान एवं जागरूकता में बढ़ोत्तरी हुई । इस प्रकार बकरियों की मृत्यु दर में पिछले एक वर्ष में पहले से काफी सुधार (10.07 प्रतिशत से घटकर 7.82 प्रतिशत) आया जिससे किसान महिलाओं ने बकरी पालन द्वारा अपनी अतिरिक्त आय में वृद्धि कर अपने परिवार की आय में योगदान किया है और आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अग्रसर हुई हैं ।

कोई भी देश सच्चे अर्थों में तब तक स्वतंत्र नहीं है जब तक वह अपनी भाषा में नहीं बोलता । *महात्मा गांधी*

हिन्दी वह धागा है जो विभिन्न मातृ भाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।

डा. जाकिर हुसैन

चरित्र का जो मूल्य है वह और किसी वस्तु का नहीं। *प्रेमचन्द्र*

हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान में दिनांक 14.09.2016 (हिन्दी दिवस) के अन्तर्गत हिन्दी पखवाड़ा के कार्यक्रमों का आयोजन दिनांक 14.09.2016 से 28.09.2016 तक किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के विभिन्न वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों व आमंत्रित अतिथियों द्वारा **'राष्ट्र विकास में हिन्दी का महत्व एवं संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग व बढ़ते कदम एवं सुधार हेतु सुझाव'** पर अपने विचार प्रकट किये गये तथा अन्त में संस्थान के निदेशक द्वारा अपने उद्बोधन में हिन्दी को अपने देश की एकता को जोड़ने वाली एक कड़ी तथा पहचान बताते हुए संस्थान के सभी कर्मियों को शत-प्रतिशत हिन्दी में कार्य करने हेतु आह्वान किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के अन्तर्गत **हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता**, **हिन्दी हस्ताक्षर प्रतियोगिता**, **आओ बताओ ईनाम पाओ प्रतियोगिता**, **हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता** एवं **हिन्दी अनुप्रयोग प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त **'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत'** विषय पर **हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं बच्चों द्वारा सहभागिता की। वैज्ञानिकों के लिए एक **हिन्दी शोध पत्र प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। दिनांक **26.09.2016** को राजभाषा से सम्बन्धित **वृत्तचित्र** और चलचित्र का प्रदर्शन समस्त कर्मचारियों के लिए संस्थान में किया गया। **दिनांक 14.10.2016 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह** का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के समस्त वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारी व कर्मचारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता निभायी एवं दिनांक 14 सितम्बर, 2016 से प्रारम्भ हुए इस हिन्दी पखवाड़े के दौरान समस्त सफल प्रतिभागियों को संस्थान निदेशक एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि किसी भी देश की एकता एवं विकास के लिए उस देश की राष्ट्रभाषा का समृद्ध होना अति आवश्यक है। अत: हम सभी का कर्तव्य है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन करने के लिए हर सम्भव प्रयास करें तथा संस्थान में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप हिन्दी में कार्य करते हुए हिन्दी के कार्यान्वयन को आगे बढ़ाना सुनिश्चित करें। हमेशा याद रखें कि दैनिक व्यवहार में हिन्दी भाषा का प्रयोग हीनता नहीं बल्कि गौरव का प्रतीक है।

राजभाषा हिन्दी से सम्बन्धित त्रैमासिक बैठक

राजभाषा अधिनियम के अन्तर्गत **संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन क्रमश: दिनांक 09 सितम्बर, 2016 एवं दिनांक 15 दिसम्बर, 2016** को संस्थान निदेशक एवं अध्यक्ष संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इन बैठकों में संस्थान के समस्त विभागाध्यक्ष, अनुभाग प्रभारी व संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने सहभागिता की। बैठकों के दौरान संस्थान में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु किये गये कार्य कलापों पर गहन विचार-विमर्श किया गया तथा संस्थान निदेशक द्वारा समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों को संस्थान के 'क' क्षेत्र में स्थित होने के कारण अपना शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में करने हेतु निर्देशित किया गया तथा प्रशासनिक अधिकारी व प्रशासन के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रत्येक दशा में धारा 3(3) का अनुपालन करने के लिये निर्देशित किया गया। इसी दौरान राजभाषा अनुभाग को समस्त कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता व रूचि जागृत करने के उद्देश्य से हिन्दी में उत्कृष्ठ कार्य करने के लिये कर्मचारियों को नियमानुसार नगद पुरस्कार प्रदान करने हेतु निर्देश जारी किया गया।

हिन्दी कार्यशाला: जुलाई से दिसम्बर, 2016 तक आयोजित

त्रैमासिक हिन्दी कार्यशाला

1. दिनांक 20.09.2016 को द्वितीय त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान के केन्द्रीय सभागार में किया गया। इस कार्यशाला में डा. रघुवीर शरण तिवारी, प्राध्यापक एवं सह-सचिव, नराकास, आगरा संघ की राजभाषा नीति, नियम एवं प्रावधान पर व्याख्यान दिया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारियों ने सहभागिता की।

2. दिनांक 16.12.2016 को तृतीय त्रैमासिक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी, व कर्मचारियों एवं हाईस्कूल उत्तीर्ण कुशल सहा. कर्मचारियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला में प्रभारी, राजभाषा द्वारा संस्थान में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

राजभाषा पुरस्कार

- केन्द्रीय गृह मंत्रालय भारत सरकार के आधीन कार्यरत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), मथुरा द्वारा वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य हेतु मथुरा जनपद के अन्तर्गत कार्यरत केन्द्रीय कार्यालयों में संस्थान को प्रथम पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

बकरी पालन के विकास में बाधक कारक

मनोज कुमार सिंह

बकरी पालन गरीब ग्रामीणों, खेतीहर मजदूरों, लघु एवं सीमांत किसानों तथा महिलाओं की आय का प्रमुख साधन है। परंतु कुछ कारणों से भारत में बकरी पालन का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। बकरी पालन के विकास में निम्न कारक बाधक हैं :

- बकरियों के प्रति पूर्वाग्रह: बकरियों को गरीबी की पहचान माना जाता रहा है साथ ही बकरियों को पर्यावरण विनाशक एवं भूमि बंजर करने वाला पशु माना जाता रहा है। उपरोक्त मिथ्या कल्पनाओं के विरूद्ध जागरूकता एवं इनका निवारण करना अत्यंत आवश्यक है।
- आवश्यक जानकारी के अभाव में परम्परागत पालन पद्धति : बकरियों को सामान्यत: बंजर हुए चारागाहों में चराकर पाला जाता है। उनकी उत्पादकता, उम्र, एवं नस्ल आदि का ध्यान नहीं रखा जाता है। कुपोषण से ग्रसित बकरियों की उत्पादकता घट जाती है। समुचित आवास एवं रक्षक टीकों के अभाव में मृत्युदर 50 प्रतिशत तक पहुँच जाती है।
- बीजू बकरों का भारी अभाव: अच्छी बढ़वार के लिये उच्च उत्पादन क्षमता वाले नर मेमनों को खस्सी कर दिया जाता है। फलस्वरूप निम्न उत्पादन क्षमता वाले बीजू बकरे नकारात्मक आनुवंशिक योगदान कर रहे हैं। साथ ही एक बकरे को रेबड़ या गाँव में 3-5 वर्ष तक स्तेमाल किया जाता है एवं उसी बकरे विशेष के बच्चों को पुन: उसी रेबड़ में बीजू बकरे के रूप में उपयोग में लाया जाता है।
- बकरी एवं बकरी उत्पाद के क्रय-विक्रय का अभाव: चूंकि बकरी गरीबों द्वारा पाली जाती है अत: स्ट्रेस सेल आर्थिक तंगी होने से बकरियाँ बहुत कम मूल्य पर बिचौलियों के हाथ बिक जाती हैं। बकरी का दूध प्रचुर औषधीय गुणों से युक्त है फिर भी बकरी के दूध का बाजार मूल्य गाय-भैंस के दूध की तुलना में लगभग आधा रहता है।
- वित्त प्रदान करने वाली संस्थाओं की जटिल प्रक्रिया : वित्त प्रदान करने वाली संस्थाओं की प्रक्रिया इतनी जटिल होती है कि अशिक्षित एवं कम पढ़े-लिखे बकरी पालकों के लिए बैकों तथा अन्य संस्थाओं से वित्त सहायता प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

प्रसार एवं किसान शिक्षा कार्यक्रम / प्रशिक्षण / कार्यशाला / संगोष्ठी

राष्ट्रीय प्रशिक्षण

- दिनांक 30 अगस्त से 8 सितम्बर, 2016 तक 67वें दस दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन संस्थान में किया गया। इस कार्यक्रम में देश के 16 राज्यों से 87 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- दिनांक 2 नवम्बर से 11 नवम्बर 2016 तक 68वें दस दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 15 राज्यों से आये 53 सहभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रदर्शनी/किसान मेला

- दिनांक 8 जुलाई, 2016 को के.वी.के. मथुरा में आयोजित किसान मेले में सहभागिता की तथा स्टाल लगाकर बकरी पालन सम्बन्धी तकनीकी जानकारी किसानों को दी गई।
- दिनांक 12 जुलाई, 2016 को संस्थान के स्थापना दिवस पर संस्थान में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- दिनांक 23–24 सितम्बर, 2016 को गोरखपुर में पूर्वान्चल कृषि प्रदर्शनी एवं किसान संगोष्ठी में सहभागिता ।
- दिनांक 27 अक्टूबर, 2016 को मथुरा में आयोजित जनपदीय किसान मेले में सहभागिता ।
- दिनांक 28–30 नवम्बर, 2016 को मुजफ्फरनगर में कृषि कुंभ 2016 में संस्थान की तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

सभा / आयोजन

• संस्थान का 37वां संस्थापना दिवस

संस्थान के 37वें संस्थापना दिवस का आयोजन 12 जुलाई, 2016 को किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्थान के निदेशक डा. एम. एस. चौहान ने वृक्षारोपण करके किया। वृक्षारोपण कार्यक्रम में संस्थान कर्मियों की भी अच्छी सहभागिता रही। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने संस्थान की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

• आर. ए. सी. बैठक

दिनांक 29 जुलाई, 2016 को संस्थान की 22वीं आर.ए.सी. बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता माफसु, नागपुर के कुलपति डा. ए.के. मिश्रा द्वारा की गई। इस अवसर पर समिति के अन्य सदस्य प्रो. एस. ए. अशोकन, डा. डी.वी. रांगनेकर, डा. बी.एस. प्रकाश (पशु पोषण एवं दैहिकी), भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली, डा. मु. नदीम फिरोज, डा. आर.के. तंवर एवं डा. एम. एस. चौहान निदेशक, के.ब.अ.सं., मखदूम उपस्थित थे। विशिष्ट आमंत्रित सदस्यों में डा. अशोक काले, श्री के. वैंकटेश (किसान प्रतिनिधि) एवं प्रभारी, पी.एम.ई. व मेम्बर सेक्रेटरी ने सहभागिता की। समिति के अध्यक्ष डा. मिश्रा द्वारा संस्थान में किए जा रहे शोध कार्यों की सराहना की तथा माननीय सदस्यों ने भी संस्थान की शोध प्रगति पर संतोष जताया। संस्थान के सभी वैज्ञानिकों ने इस बैठक में भाग लिया।

सभा / आयोजन

• स्वतंत्रता दिवस

संस्थान में 15 अगस्त, 2016 को स्वतंत्रता दिवस की 70वीं वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. एम. एस. चौहान ने झंडारोहण करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा अपने उद्‌बोधन में संस्थान कर्मियों को उनके अच्छे कार्यों के लिए धन्यवाद दिया।

• बकरी पालकों के हेतु एकल खिड़की का उद्‌घाटन

दिनांक 26 सितम्बर, 2016 को सचिव, डेयर व महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली माननीय डा. त्रिलोचन माहपात्र द्वारा किसानों/बकरी पालकों की सुविधा हेतु संस्थान में किसान एकल खिड़की का उद्‌घाटन किया गया। इस अवसर पर डा. महापात्र ने गांवों से आये किसानों/बकरी पालकों से वार्तालाप किया, उनकी समस्याऐं ध्यान से सुनी। डा. महापात्र ने संस्थान में विभिन्न प्रक्षेत्रों एवं प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया। इस अवसर पर आयोजित सभा में महानिदेशक ने संस्थान में बकरियों की अधिक नस्लें रखने के लिए सुझाव दिया साथ ही बकरी पालन की उन्नति के लिए विभिन्न क्षेत्रों जैसे मल्टी वैलेन्ट वैक्सीन, क्लोनिंग एवं आनुवांशिक वृद्धि हेतु प्रजनन तकनीकों पर विशेष बल दिया।

• किसान छात्रावास आधारशिला

दिनांक 26 सितम्बर, 2016 को पंड़ित दीनदयाल उपाध्याय किसान छात्रावास की संस्थान में आधारशिला पट्‌ट लगाया गया। इस महत कार्य का सम्पादन माननीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह जी द्वारा किया गया। इस दौरान मंत्री जी राष्ट्रीय कृषि उन्नति मेले का उद्‌घाटन भी दीनदयाल धाम, नगला चन्द्रभान में किया गया। इस अवसर पर डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव डेयर व महानिदेशक, भा.कृ.अ.प. नई दिल्ली , श्री देवेन्द्र चौधरी सचिव पशुधन एवं मत्स्य विभाग, डा. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार) भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली तथा संस्थान के निदेशक डा. एम. एस. चौहान की उपस्थिति में किया गया।

• सतर्कता जागरूकता सप्ताह

केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में दिनांक 31 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2016 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस दौरान संस्थान के विभिन्न कार्यस्थलों पर इससे सम्बन्धित पट्‌टिकाऐं लगाई गई।

दिनांक 31 अक्टूबर, 2016 को संस्थान के सतर्कता अधिकारी डा. एस. डी. खर्चे द्वारा संस्थान के कर्मचारियों को सतर्कता एवं कार्यशैली में पारदर्शिता लाने हेतु शपथ ग्रहण भी करायी गयी।

सम्मान, पुरस्कार एवं विशिष्ट उपलब्धि

राष्ट्रपति पुरस्कार

संस्थान के डा. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक द्वारा हिन्दी में लिखित पुस्तक 'बकरी–भेड़ रोग: चिकित्सा एवं प्रबन्धन', बकरी एवं भेड़ रोगों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। इस पुस्तक में कुल 13 अध्याय, 27 चित्र एवं 7 तालिकाओं के रूप में बकरी–भेड़ रोगों की गहन चर्चा की गई है। पुस्तक में हिन्दी भाषा का प्रयोग सरल सुपाच्य और प्रभावी है जो विषय की निरन्तरता को बनाये रखता है। यह पुस्तक पशुपालन के क्षेत्र में किया गया एक सफल प्रयास है। इस पुस्तक के लेखक डा. दिनेश कुमार शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक को दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को माननीय राष्ट्रपति द्वारा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रफी अहमद किदवई पुरस्कार 2015

संस्थान निदेशक डा. एम. एस. चौहान को भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली द्वारा प्रतिष्ठित रफी अहमद किदवई पुरस्कार 2015 उनके अद्वितीय शोध कार्य हेतु प्रदान किया गया। यह विशिष्ट शोध कार्य एन.डी.आर.आई. करनाल की आई.वी.एफ. प्रयोगशाला में सम्पादित किया गया। इसमें डा. चौहान ने विभिन्न पशुओं जैसे गाय, भैंस, याक एवं बकरी में आई.वी.एफ. तकनीक से भ्रूण उत्पादन की सरल तकनीक विकसित की। भैंसों में एम्ब्रायोनिक स्टेम सैल लाइन्स को विकसित किया। गौपशु एवं याक में ओवम पिकप आई.वी.एफ. से क्लोनिंग टेक्नोलाजी को भी विकसित किया। डा. चौहान ने इस विषय में अनेकों शोध पत्र हाई इम्पेक्ट जर्नलस में प्रकाशित किए। उनकी देश विदेश में अच्छे शोधकर्ता के रूप में ख्याति है।

भा.कृ.अ.प. टीम अवार्ड

संस्थान निदेशक डा. एम. एस. चौहान को संयुक्त रूप से भा.कृ.अ.प. टीम अवार्ड से नवाजा गया। इस टीम के अगुआ डा. एस.के.सिंगला, प्र. वैज्ञानिक , एन.डी. आर.आई., करनाल थे। इसमें जोन फ्री एम्ब्रियो क्लोनिंग को भैंस में प्रयोग करके उच्च आनुवांशिक क्षमता वाली सन्ततियाँ पैदा की गईं, जिनके नाम क्रमश: गरिमा 2, महिमा, श्रेष्ठ, स्वर्ण, लालिमा, रजत एवं अपूर्वी है।

एस. सी. सूद अवार्ड

डा. रवि रंजन, वैज्ञानिक पशु दैहिकी एवं जनन विभाग को उनकी पी.एच.डी. थीसिस के आधार पर डा. एस. सी. सूद मैमोरियल बेस्ट थीसिस अवार्ड 2015 से नवाजा गया। यह पुरस्कार सापी संस्था द्वारा आयोजित सेमिनार में दिनांक 21 दिसम्बर, 2016 को महू में प्रदान किया गया।

रिव्यूवर एक्सीलेन्स अवार्ड

डा. बी.राय प्रधान वैज्ञानिक (पशुधन प्रबन्धन) को ए.आर.सी. करनाल, द्वारा रिव्यूवर एक्सीलेन्स अवार्ड प्रदान किया गया। इस पुरस्कार को दिनांक 16 नवम्बर, 2016 को निर्गत किया गया।

विशिष्ट अतिथि

इस दौरान संस्थान में कई विशिष्ठ आगन्तुकों का आगमन हुआ जिनकी सूची निम्नवत है।

माननीय कृषि राज्य मंत्री श्री पुरूषोत्तम रूपाला दिनांक 28 सितम्बर, 2016

माननीय कृषि श्री सुदर्शन भगत, दिनांक 29 सितम्बर, 2016

डा. त्रिलोचन महापात्र , सचिव डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अ.प., नई दिल्ली 25-26 सितम्बर, 2016

श्री आर.पी. सिंह, भा.कृ.अ.प.,नई दिल्ली के गवर्निंग बाड़ी के सदस्य दिनांक 16-17 सितम्बर, 2016

डा. ए.के. श्रीवास्तव , सदस्य, ए.एस.आर.बी. नई दिल्ली पूर्व निदेशक, एन.डी.आर.आई. करनाल दिनांक 11-12 नवम्बर, 2016

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
(ISO 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
मखदूम, फरह 281 122, मथुरा (उ.प्र.) भारत
दूरभाष न.: 0565-2763380, फैक्स न.: 0565-2763246
ई-मेल: director@cirg.res.in,
बेबसाइट: http:// cirg.res.in
हेल्पलाइन न.: 0565-2763320

यमुना सिंडिकेट, मथुरा, ई-मेल : ys9456684421@gmail.com द्वारा मुद्रित